रानीमिस्त्री बनकर स्वावलंबन बनी और अब अपने बच्चों का भविष्य गढ़ रहीं महिलाएं.

झारखंड | महिला सशक्तीकरण की नयी पहल

सखी मंडल से जुड़कर समृद्ध हो रहीं ग्रामीण महिलाएं

वि श्व बैंक के भारत में निदेशक जुनैद कमाल अहमद ने शायद सोचा भी न होगा कि झारखंड जैसे आदिवासी बहुल राज्य के उनके दौरे पर उन्हें ग्रामीण महिला सशक्तीकरण और स्वरोजगार के ऐसे जीवंत उदाहरण देखने को मिलेंगे. आखिर कौन सोच सकता था कि देश के पिछड़े राज्यों में गिने जानेवाले झारखंड की रघुवर सरकार जल, जंगल और जमीन से जुड़े गरीब और अति गरीब लोगों को इन्हीं संसाधनों से भरपेट भोजन मिल सके, इसके लिए इसे अपना मिशन बना लेगी. इसका श्रेय जाता है आजीविका मिशन, झारखंड स्टेट लाइवलीहुड प्रोमोशन सोसायटी (जेएसएलपीएस) एवं ग्रामीण विकास विभाग को.

आजीविका डेस्क

पलामू में रानीमिस्त्री बनकर आत्म निर्भर बनी और अब अपना परिवार चला रहीं महिलाएं.

आजीविका ने गरीब ग्रामीणों को दिया सहारा

आजीविका का उद्देश्य गरीब ग्रामीण महिलाओं को स्वयं सहायता समूह के जरिये संगठित करते हुए उन्हें रोजगार का साधन मुहैया कराना है. इससे न केवल ग्रामीण महिलाओं में आत्मविश्वास बढ़ेगा, बल्कि घर बैठे रोजगार भी मिलेगा. प्राकृतिक संसाधनों का बेहतर उपयोग करते हुए संगठित होकर कार्य कर सके. इसी बुनियादी सोच के साथ आजीविका मिशन की शुरुआत हुई. राज्य से गरीबी को जड़ से खत्म करने में झारखंड स्टेट लावलीहुड प्रमोशन सोसाइटी यानी जेएसएलपीएस का महत्वपूर्ण योगदान है. गांव से गरीबी मिटाने के लिए राज्य सरकार ने वर्ष 2009 में जेएसएलपीएस का गठन किया. वर्ष 2011 में आजीविका मिशन आने के बाद इसकी जिम्मेदारी जेएसएलपीएस को मिली. जेएसएलपीएस ने मिशन मोड में राज्य के कई गांवों में महिला समूहों का गठन कर ग्रामीण महिलाओं में आत्मविश्वास जगाया और अब यही ग्रामीण महिलाएं आर्थिक व सामाजिक बदलाव की वाहक बन रही हैं.

आजीविका दीदी कैफे की अलग बनी पहचान

कोट्टे आजीविका महिला ग्राम संगठन की चार महिलाओं ने गरीबी को मात देते हुए रांची के नगड़ी प्रखंड के स्टेट हाइवे पर आजीविका दीदी कैफे नामक ढाबा खोला है, जो पूरे इलाके में मशहूर हो चुका है. यह ढाबा सखी मंडल से समृद्ध होती महिलाओं का एक उदाहरण है. ऐसे कई ढाबे झारखंड में जगह-जगह खुल रहे हैं. राज्य सरकार ने इस पहल की सफलता को देखते हुए राज्य के सभी जिला प्रशासन कार्यालय एवं प्रखंड कार्यालय में आजीविका दीदी कैफे सखी मंडल के माध्यम से खोलने का निर्णय लिया गया है. अब तक 35 से अधिक आजीविका दीदी कैफे खुल चुके हैं.

मुख्यमंत्री सखी मंडल स्मार्टफोन योजना

समूह की दीदियां अब डिजिटल बन गयी हैं. इस योजना का उद्देश्य स्मार्टफोन के माध्यम से नकदी अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने के साथ-साथ डिजिटल व कैशलेस ट्रांजेक्शन की ओर गांव को आगे बढ़ाने में मदद करना है. इसके तहत राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन संपोषित एक लाख सखी मंडलों के बीच स्मार्टफोन उपलब्ध कराया गया. इसके कई लाभ भी हैं. स्वलेखा एप के जरिये जहां दीदियां अपने समूह का हिसाब-किताब रख रही हैं, वहीं शक्ति एप के माध्यम से महिलाओं को सुरक्षा मिलना, भीम एप के जरिये बैंकिंग कार्यों में आसानी होना, खेती-बारी व सरकारी योजनाओं एवं मौसम की जानकारी भी मिल रही है.

खुद के साथ ग्रामीण महिलाओं को डिजिटल बनाती टैबलेट दीदी.

गरीब महिलाओं की ताकत है समूह

गांव की आबादी के अनुसार, समूहों का गठन होता है. एक समूह में 10-15 महिलाओं को रखा जाता है. समूह को ऊपर की संस्थाओं से भी ताकत मिलती है. गांव के सभी समूहों को मिला कर एक ग्राम संगठन (वीओ) बनाया जाता है. कई गांवों के ग्राम संगठन को मिला कर क्लस्टर लेवल फेडरेशन (सीएलएफ) बनता है. प्रखंड के कई क्लस्टर लेवल फेडरेशन को मिला कर ब्लॉक लेवल फेडरेशन (बीएलएफ) बनता है. हर संगठन अपने नीचे के संगठन की हर गतिविधि पर नजर रखते हुए उसकी मदद करता है. समूह की बैठकों में बचत के साथ-साथ एक मुट्ठी चावल भी इकट्ठा किया जाता है, ताकि जरूरतमंदों को निःशुल्क चावल मुहैया कराया जा सके.

कैसे होता है समूह का गठन

जिस गांव में समूह का गठन करना है, वहां नुक्कड़ नाटक के माध्यम से ग्रामीणों को विभिन्न योजनाओं से रूबरू कराया जाता है. इसके बाद पांच दीदियों की टीम 15 दिन उसी गांव में रह कर व घर-घर घूम कर ग्रामीण महिलाओं को संगठित करते हुए उनका समूह बनाती है, हालांकि कई ग्रामीण महिलाएं उनकी बातों को विशेष तवज्जो नहीं देती हैं. ऐसी स्थिति में गांव-गांव में गीत व नृत्य के माध्यम से भी समूह की गतिविधियों, उसमें जुड़ने व बचत करने से होने वाले फायदे के बारे में बताया जाता है. समूह से जुड़ने व लगातार बचत करते रहने के उपरांत जरूरत पड़ने पर ग्रामीण महिलाएं समूह से कम ब्याज दर पर लोन भी ले सकती हैं.

सीमा की बेटी बनीं इंजीनियर

चाईबासा की सीमा की दो बेटियां हैं. पति का देहांत हो जाने के बाद उन्हें दो बेटियों के लालनपालन में कठिनाई हो रही थी. ऐसे में वह सखी मंडल से जुड़ीं और धीरे-धीरे सीमा न केवल अन्य कई महिलाओं को आजीविका मिशन से जोड़ने में सफल हुईं, बल्कि उनके हालात ऐसे बदल गये कि उनकी अपनी बेटी इंजीनियरिंग कर रही है.

जेएसएसपीएस के सीइओ परितोष उपाध्याय ने कहा

जेएसएलपीएस ग्रामीणों को गरीबी से बाहर निकालने व आत्मनिर्भर बनाने को प्रयासरत

झारखंड स्टेट लाइवलीहुड प्रमोशन सोसाइटी के सीइओ परितोष उपाध्याय कहते हैं कि ग्रामीण इलाकों में गरीबी कम करने या दूर करने के उद्देश्य से योजनाएं चलायी गयी हैं. यह केवल कुछ उदाहरण नहीं हैं, बल्कि पूरे राज्य में जहां- जहां भी इन योजनाओं का कार्यान्वयन हुआ है, वहां गांवों में गरीब महिलाओं की सामुदायिक संस्था बनाकर आजीविका के स्रोतों से उनको जोड़ने का काम किया जाता है. सखी मंडल की महिलाओं को लाभप्रद आजीविका की गतिविधियों से जोड़ कर खुद के सहारे गरीबी से बाहर निकलने में उनकी मदद की जाती है. कहते हैं कि गरीबी उन्मूलन का समग्र उद्देश्य इन ग्रामीण महिलाओं को सशक्त बनाना है, ताकि ग्रामीण समुदाय को सशक्त और समृद्ध बनाया जा सके.

ग्राम संगठन की महिलाओं की ताकत देखिए

पश्चिमी सिंहभूम जिला अंतर्गत मनोहरपुर प्रखंड के फुलवारी गांव की महिला सदस्यों ने श्रमदान कर अपने गांव में कच्ची सड़क बनवा दी. इस सड़क के बन जाने से फुलवारी गांव के ग्रामीणों को आवागमन में काफी सहूलियत होने लगी. ग्राम संगठन सदस्य सीता देवी कहती हैं कि पहले गांव में सड़क नहीं होने से काफी परेशानी होती थी. अगर कोई बीमार पड़ जाये, तो उसे ले जाने में काफी मुश्किलों का सामना करना पड़ता था, लेकिन दीदियों ने श्रमदान कर इस गांव को नया जीवन दिया है.

गांव की दीदियां हुईं डिजिटल

नरेंद्र मोदी के डिजिटल इंडिया प्रोग्राम की तर्ज पर झारखंड ने सखी मंडल के लेखा-जोखा को मजबूत करने के लिए ग्रामीण महिलाओं को टैबलेट दीदी के रूप में तैयार किया है. ग्रामीण इलाकों की जो महिलाएं मोबाइल प्रयोग करना भी नहीं जानती थीं, आज बड़े आराम से टैबलेट पर काम कर रही हैं और न केवल उससे आवश्यक जानकारी प्राप्त कर रही हैं, बल्कि दूसरी महिलाओं का हिसाब-किताब भी रख रहीं हैं. इंटरनेट का बखूबी प्रयोग भी कर रही हैं. झारखंड में आज 2000 से अधिक ऐसी महिलाएं हैं, जो पहले टैबलेट का मतलब दवाई समझती थीं, पर आज खुद टैबलेट दीदी के रूप में काम कर रही हैं. इससे जो आत्मविश्वास पैदा हो रहा है, वह जबरदस्त है.

बेहतर कल की एकमात्र उम्मीद है आजीविका

नयी तकनीक से झारखंड के आदिवासी इलाकों में धान की पैदावार भी बढ़ी है. खेती के साथ ग्रामीण मुर्गी, बतख, बकरी व सूकर पालन का काम भी बखूबी कर रहे हैं. समूह के जरिये इन्हें रोजगार से जोड़ा जा रहा है. समूह से कर्ज लेकर शुरू किये गये इस व्यवसाय ने ही इन परिवारों को गरीबी के दलदल से बाहर निकाला है. पहले खेती और मजदूरी करके भी इन्हें दो वक्त का खाना नसीब नहीं होता था, वहीं अब इस तरह के व्यवसाय को अपना कर खुद व दूसरों को रोजगार मुहैया करा रही हैं. महिलाओं के प्रोत्साहन से आत्मविश्वास बढ़ा है. वह अब परंपरागत धंधों से बाहर निकल कर नये क्षेत्रों में भी हाथ आजमाना चाहती हैं. बढ़ती आबादी, सिमटते शहर और सिमटते संसाधन ग्रामीण संस्कृति पर खतरा बन कर मंडराने लगे थे. गांवों के वजूद को बचाने के लिए जरूरी था कि लोगों को उनके माहौल ही में जीने के साधन मुहैया कराया जाये. आजीविका मिशन और झारखंड स्टेट लाइवलीहुड प्रोमोशन सोसाइटी ने इस काम को बखूबी अंजाम दिया है. आदिवासी बहुल झारखंड की महिलाएं भी पूरे दम-खम के साथ सखी मंडल से जुड़ रही हैं. वह समझ रही हैं कि यही वह ताकत है, जो उन्हें उनकी जड़ों से जोड़े रख सकती हैं. उन्हें उनके हिस्से की रोटी और माटी दे सकती हैं. उनके लिए बेहतर कल की एकमात्र उम्मीद है आजीविका.

घर बैठे बैंकिंग सुविधा उपलब्ध करातीं बीसी कनक लता टोप्पो

रांची जिला अंतर्गत बेड़ो प्रखंड के पतरा टोली गांव की रहनेवाली कनक लता टोप्पो बैंकिंग सखी कौरस्पॉन्डेंट बन गयी हैं. आज कनक झारखंड ग्रामीण बैंक की बीसी सखी के रूप में काम कर रही हैं और वित्तीय बैंकिंग सेवाओं को ग्रामीण लोगों तक पहुंचा रही हैं. कनक की आज अपनी पहचान है और वो अपने गांव में बैंक दीदी के नाम से जानी जाती हैं. सुदूर गांवों के परिवार, जो बैंक कभी नहीं गये थे, कनक उन तक बैंकिंग सेवाएं पहुंचा रही हैं. सैकड़ों बुजुर्ग महिलाएं जो अपने बिस्तर से नहीं उठ पाती हैं, उनको घर बैठे वृद्धा पेंशन दिला रही हैं. इन सबके पीछे जो ताकत है, वो है सखी मंडल एवं आजीविका मिशन.

ग्रामीण महिलाओं के जीवन में खुशियां लाता आजीविका मिशन

नामकुम के डोलाम गांव की प्रफुल्लित एकता का उदाहरण भी उल्लेखनीय है. उनके पति बेरोजगार तो नहीं थे, लेकिन पति और तीन बच्चों का मुश्किल से पेट भर पाता था. आजीविका कृषक मित्र, जो गांव के गरीब परिवारों को खेती की उन्नत तकनीकों से जोड़ना और उन्हें प्रशिक्षित करना सीखाते हैं, ने प्रफुल्लित के जीवन में नयी खुशियां लायी. प्रफुल्लित तो केवल एक उदाहरण है. अनेक ग्रामीण महिलाओं ने स्वरोजगार के क्षेत्र में कदम रखा और गरीबी के दलदल से बाहर निकलीं. जहां पहले खेती और मजदूरी करके भी इन्हें दो वक्त का खाना नसीब नहीं होता था, आज उनमें से कई अपने बच्चों को प्राइवेट स्कूलों में पढ़ा रही हैं. इसी प्रकार बकरी पालन ने जागा टोली, गेतलसूद की रूलुआ देवी की माली हालत सुधार दी है. इसको रोजगार का ठोस जरिया बनाने में पशु सखियां काफी मददगार साबित हो रही हैं. पशु सखियों को खास प्रशिक्षण दिया जाता है, जिसके बाद यह मामूली फीस लेकर पशुओं का इलाज करती हैं. पशु सखी स्वयं एक प्रतिष्ठित रोजगार बन गया है.

स्वच्छ भारत मिशन की वाहक बनतीं दीदियां

महिला समूहों से जुड़ कर ग्रामीण महिलाएं अब आत्मनिर्भर होने लगी हैं. समूह की सदस्य सरकारी योजनाओं को सही रूप में धरातल पर उतारने में लगी हैं. स्वच्छ भारत मिशन के तहत शौचालय निर्माण में समूह की महिलाएं खुद रानी मिस्त्री का काम कर रही हैं, जिससे उन्हें अपने ही गांव में रोजगार मिल रहा है. इसके लिए आजीविका मिशन की ओर से समूह की महिलाओं को विशेष प्रशिक्षण दिया जा रहा है, जिसमें उन्हें निगरानी की भी जिम्मेदारी दी गयी है.

ग्रीन कार्ड से हरित क्रांति की ओर बढ़तीं मोबाइल दीदी

राज्य में ग्रीन स्मार्ट कार्ड से ग्रीन रिवोल्यूशन (हरित क्रांति) ने रफ्तार पकड़ ली है. इसका उद्देश्य स्वयं सहायता समूह की महिला सदस्यों को खेती-बारी, स्वास्थ्य, पशुपालन के तरीके व रोजगार संबंधी जानकारी विस्तार से उपलब्ध कराना है. एसएचजी महिलाएं गांवों में घूम-घूम कर मोबाइल के माध्यम से मिली जानकारी को समूह की अन्य महिलाओं के बीच साझा कर रही हैं और इसका भरपूर लाभ भी उठा रही हैं. इफको के माध्यम से आजीविका से जुड़ीं वैसी महिला सदस्यों को ग्रीन सीम कार्ड योजना से जोड़ा गया है, जो इसका लाभ उठाते हुए दूसरों को भी जानकारी दे रही हैं. गांवों में किसान मित्र की अहम भूमिका निभाने वाली स्वयं सहायता समूह की महिलाओं को इससे जोड़ा गया है. इसके तहत चयनित किसान मित्र समेत अन्य एसएचजी महिलाओं को इफको की ओर से मुफ्त में एक सीम कार्ड मुहैया कराया गया है. इस कार्ड से एसएचजी महिलाओं को फसल लगाने के तरीके, फसल में लगने वाले कीट और उसकी रोकथाम, पशुपालन, प्रबंधन, बाजार मूल्य, मौसम, सरकारी योजनाएं, खेती-बारी, स्वास्थ्य व रोजगार की जानकारी दी जाती है.

बच्चों का भविष्य गढ़तीं समूह की दीदियां

गांव के छोटे-छोटे बच्चों को खेल-खेल में पढ़ाई का जिम्मा उठायी हैं समूह की दो दीदियां. पश्चिमी सिंहभूम जिला अंतर्गत मनोहरपुर प्रखंड के तिरला गांव की दो दीदियां आशा तिग्गा व सुभानी तिग्गा ने शहरी स्कूल के परिवेश को अपने गांव में लाने का सपना साकार किया है. वर्ष 2016 में जेएसएलपीएस के सहयोग से लिटिल ऐंजल प्ले स्कूल की आधारशिला रखी गयी थी. रात रानी आजीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ीं आशा तिग्गा व सुभानी तिग्गा ने समूह से करीब 60 हजार रुपये बतौर ऋण लेकर प्ले स्कूल की शुरुआत की. मात्र दो बच्चों से इसकी शुरुआती हुई और ये दोनों बच्चे समूह की सदस्य आशा तिग्गा व सुभानी तिग्गा के ही थे. धीरे-धीरे गांव व आसपास के लोगों ने प्ले स्कूल के महत्व को समझा और अपने छोटे बच्चे को लिटिल ऐंजल प्ले स्कूल में दाखिला कराना शुरू किया. वर्तमान में इस प्ले स्कूल में बच्चों की संख्या 21 तक पहुंच गयी है. इन 21 बच्चों में पांच बच्चे समूह के सदस्यों की हैं, जिन्हें निःशुल्क शिक्षा मिलती है, वहीं अन्य बच्चों के अभिभावकों से तीन सौ रुपये प्रतिमाह स्कूल फीस ली जाती है. दोनों दीदियों की इच्छा है कि शहरों की तरह गांव के बच्चे भी उत्कृष्ट शिक्षा प्राप्त करें और इसके लिए शुरुआती शिक्षा मजबूत होनी चाहिए. प्ले स्कूल को संचालित करने में होने वाली परेशानियों से भी दोनों दीदियां दो-चार हो रही हैं. कहती हैं कि सरकारी मदद अगर मिले, तो भाड़े के मकान में चल रहा यह प्ले स्कूल का अपना मकान हो सकता है. दूसरी ओर, विभिन्न परेशानियों के बीच दोनों दीदियां गांव के छोटे-छोटे बच्चों का भविष्य बेहतर तरीके से गढ़ने में लगी हैं.